International Journal For Technological Research In Engineering
Volume 10 Issue 6 February-2023 ISSN: 2347 - 4718

औपनिवेशिक भारत में आर्थिक शोषण और 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत का गहन विश्लेषण

डॉ. अनुपम मित्र
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, स्वार, रामपुर(उ.प्र.)

सारांश

औपनिवेशिक भारत में आर्थिक संरचना का रूपांतरण ब्रिटिश शासन की नीतियों के परिणामस्वरूप हुआ, जिसका मूल उद्देश्य भारतीय संसाधनों का उपयोग साम्राज्यवादी हितों की पूर्ति के लिए करना था। प्रस्तुत अध्ययन 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत के माध्यम से इस शोषण की प्रकृति, तंत्र और प्रभावों का समालोचनात्मक विश्लेषण करता है। यह स्पष्ट किया गया है कि आर्थिक निकासी केवल व्यापारिक असंतुलन तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें प्रशासनिक व्यय, कर प्रणाली, वेतन, पेंशन और संस्थागत व्यवस्थाएँ भी शामिल थीं। इस प्रक्रिया ने भारत की पूंजी संचय क्षमता को कमजोर किया और उसे एक निर्भर अर्थव्यवस्था में परिवर्तित कर दिया। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि औपनिवेशिक नीतियों के कारण कृषि संकट, औद्योगिक पतन और व्यापक गरीबी उत्पन्न हुई। इस प्रकार, 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत औपनिवेशिक आर्थिक शोषण को समझने का एक प्रभावी विश्लेषणात्मक उपकरण सिद्ध होता है।

कुंजी शब्द: आर्थिक शोषण, धन निकासी सिद्धांत, औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था, कर प्रणाली, निर्भरता

1. परिचय

औपनिवेशिक भारत की आर्थिक संरचना को समझना केवल अतीत की ऐतिहासिक परिस्थितियों का विश्लेषण नहीं है, बल्कि यह वर्तमान आर्थिक असमानताओं और विकास संबंधी चुनौतियों की जड़ों को समझने का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर बीसवीं शताब्दी के मध्य तक भारत ब्रिटिश शासन के अधीन रहा, जिसके दौरान उसकी अर्थव्यवस्था में गहरे और संरचनात्मक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का प्रमुख उद्देश्य भारत के संसाधनों का उपयोग ब्रिटिश साम्राज्य के औद्योगिक और आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए करना था।

इस संदर्भ में 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत एक केंद्रीय अवधारणा के रूप में उभरता है, जिसे दादाभाई नौरोजी ने प्रतिपादित किया। इस सिद्धांत के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि भारत से निरंतर धन का प्रवाह ब्रिटेन की ओर हो रहा था, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक था। यह प्रक्रिया केवल व्यापारिक असंतुलन तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें प्रशासनिक व्यय, कर प्रणाली, वेतन, पेंशन और अन्य संस्थागत तंत्र भी शामिल थे।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य औपनिवेशिक भारत में आर्थिक शोषण की प्रकृति, उसके तंत्र और उसके दीर्घकालिक प्रभावों का समालोचनात्मक विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत को एक विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में उपयोग करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार औपनिवेशिक नीतियों ने भारत की आर्थिक स्वायत्तता को कमजोर किया और उसे एक निर्भर अर्थव्यवस्था में परिवर्तित कर दिया।

1.1 औपनिवेशिक आर्थिक संरचना का उद्भव

औपनिवेशिक भारत की आर्थिक संरचना का निर्माण एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में हुआ, जिसकी शुरुआत व्यापारिक हस्तक्षेप से हुई और जो अंततः पूर्ण राजनीतिक नियंत्रण में परिवर्तित हो गई। प्रारंभ में ब्रिटिश व्यापारिक कंपनियों ने भारत में व्यापार के उद्देश्य से प्रवेश किया, किंतु धीरे-धीरे उन्होंने प्रशासनिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त कर लिए। इस परिवर्तन के साथ ही भारत की आर्थिक नीतियाँ भी पूरी तरह से ब्रिटिश हितों के अनुरूप निर्धारित होने लगीं।

इस प्रक्रिया में भारत की पारंपरिक आर्थिक संरचना, जो स्थानीय उत्पादन, हस्तशिल्प और कृषि पर आधारित थी, को व्यवस्थित रूप से परिवर्तित किया गया। औपनिवेशिक नीतियों ने स्थानीय उद्योगों को कमजोर किया और भारत को कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता तथा तैयार माल के उपभोक्ता के रूप में स्थापित किया। इस प्रकार, भारत की अर्थव्यवस्था को एक परिधीय अर्थव्यवस्था के रूप में ढाला गया, जो वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था में अधीनस्थ भूमिका निभाती थी।

इसके अतिरिक्त, औपनिवेशिक शासन ने भूमि राजस्व प्रणालियों में भी व्यापक परिवर्तन किए, जैसे स्थायी बंदोबस्त और रैयतवाड़ी व्यवस्था। इन नीतियों का उद्देश्य अधिकतम राजस्व प्राप्त करना था, जिससे किसानों पर भारी आर्थिक बोझ पड़ा। इस प्रकार, औपनिवेशिक आर्थिक संरचना केवल

उत्पादन और व्यापार तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी गहराई से प्रभावित करती थी।

1.2 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत की अवधारणा

'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत औपनिवेशिक आर्थिक शोषण को समझने का एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक ढांचा प्रदान करता है। दादाभाई नौरोजी ने इस सिद्धांत के माध्यम से यह तर्क दिया कि भारत से निरंतर धन का प्रवाह ब्रिटेन की ओर हो रहा था, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत हानिकारक था। उनके अनुसार यह 'ड्रेन' प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में होता था।

प्रत्यक्ष रूप में यह प्रक्रिया प्रशासनिक व्यय, सेना के खर्च, ब्रिटिश अधिकारियों के वेतन और पेंशन के रूप में दिखाई देती थी, जिन्हें भारत से प्राप्त राजस्व के माध्यम से भुगतान किया जाता था। अप्रत्यक्ष रूप में यह व्यापारिक असंतुलन, विदेशी निवेश पर लाभ और अन्य वित्तीय लेन-देन के माध्यम से होता था। महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह धन भारत में पुनर्निवेश नहीं किया जाता था, जिससे देश की पूंजी संचय प्रक्रिया बाधित होती थी।

नौरोजी के अनुसार यह 'ड्रेन' भारत में गरीबी और आर्थिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण था। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि यदि यह धन भारत में ही रहता और निवेश किया जाता, तो देश की आर्थिक स्थिति कहीं अधिक सुदृढ़ होती। इस प्रकार, यह सिद्धांत औपनिवेशिक शासन की आर्थिक नीतियों की आलोचना का एक प्रभावी माध्यम बन गया।

1.3 आर्थिक शोषण के तंत्र और प्रक्रियाएँ

औपनिवेशिक भारत में आर्थिक शोषण विभिन्न तंत्रों और प्रक्रियाओं के माध्यम से संचालित हुआ, जो आपस में जुड़े हुए थे। इनमें सबसे प्रमुख था 'होम चार्जेज' का तंत्र, जिसके अंतर्गत भारत से ब्रिटेन को प्रशासनिक और सैन्य व्यय के लिए बड़ी मात्रा में धन भेजा जाता था। यह एकतरफा प्रवाह था, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

इसके अतिरिक्त, व्यापारिक नीतियाँ भी आर्थिक शोषण का एक महत्वपूर्ण साधन थीं। भारत से कच्चे माल का निर्यात किया जाता था, जबकि ब्रिटेन से तैयार माल आयात किया जाता था। इस प्रक्रिया ने न केवल भारत के पारंपरिक उद्योगों को कमजोर किया, बल्कि उसे एक उपभोक्ता बाजार में भी परिवर्तित कर दिया।

कर प्रणाली भी इस शोषण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। भूमि राजस्व की उच्च दरों और कठोर वसूली प्रणाली ने किसानों की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर दिया। कई बार किसानों को अपनी भूमि तक खोनी पड़ी और वे ऋण के जाल में फंस गए।

इसके साथ ही, औपनिवेशिक शासन ने परिवहन और संचार के साधनों का विकास किया, किंतु इनका मुख्य उद्देश्य भारतीय संसाधनों का अधिक कुशल दोहन करना था। इस प्रकार, आर्थिक शोषण एक बहुआयामी प्रक्रिया थी, जिसमें विभिन्न तंत्र एक साथ कार्य कर रहे थे।

1.4 अध्ययन की प्रासंगिकता और समालोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

औपनिवेशिक भारत में आर्थिक शोषण और 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत का अध्ययन वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह न केवल ऐतिहासिक तथ्यों को समझने में सहायक है, बल्कि यह यह भी दर्शाता है कि किस प्रकार वैश्विक आर्थिक संरचनाएँ असमानता को बनाए रख सकती हैं।

समालोचनात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए तो कुछ विद्वानों ने यह तर्क दिया है कि औपनिवेशिक शासन ने भारत में आधुनिक अवसंरचना, जैसे रेलवे और संचार प्रणाली, का विकास किया। हालांकि, इस दृष्टिकोण की व्यापक आलोचना की गई है, क्योंकि यह विकास मुख्यतः औपनिवेशिक हितों की पूर्ति के लिए किया गया था, न कि भारतीय समाज के समग्र विकास के लिए।

इसके विपरीत, राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोण यह स्पष्ट करते हैं कि औपनिवेशिक नीतियाँ मूलतः शोषणकारी थीं और उन्होंने भारत की आर्थिक स्वायत्तता को कमजोर किया। 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत इस शोषण को समझने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है, जो यह दर्शाता है कि किस प्रकार संसाधनों का निरंतर बाह्य प्रवाह भारत की आर्थिक प्रगति में बाधा बना।

वर्तमान वैश्विक संदर्भ में, जब विकासशील देशों और विकसित देशों के बीच आर्थिक असमानता पर चर्चा हो रही है, यह अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। यह यह समझने में सहायता करता है कि ऐतिहासिक शोषण की प्रक्रियाएँ किस प्रकार वर्तमान आर्थिक संरचनाओं को प्रभावित करती हैं।

इस प्रकार, प्रस्तुत अध्ययन औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों, उनके तंत्र और उनके प्रभावों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत किस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था के शोषण को समझने में एक प्रभावी उपकरण के रूप में कार्य करता है।

2. साहित्य समीक्षा

नौरोजी (1901) ने औपनिवेशिक भारत में आर्थिक शोषण को समझाने के लिए 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने यह तर्क दिया कि भारत से निरंतर धन का प्रवाह ब्रिटेन की ओर हो रहा था। उन्होंने होम चार्जेज, प्रशासनिक व्यय तथा व्यापारिक असंतुलन को इस निकासी के प्रमुख माध्यम के रूप में पहचाना। उनके अनुसार यह प्रक्रिया भारत की गरीबी का मुख्य कारण थी क्योंकि देश के संसाधन आंतरिक निवेश के बजाय बाहरी शक्तियों के हित में प्रयुक्त हो रहे थे।

दत्त (1902) ने भारत के आर्थिक इतिहास का विश्लेषण करते हुए औपनिवेशिक नीतियों के प्रतिकूल प्रभावों को विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भूमि राजस्व नीतियाँ, विशेषकर स्थायी बंदोबस्त, किसानों के शोषण का प्रमुख साधन बनीं। उनके अनुसार कृषि उत्पादन में वृद्धि के बावजूद किसानों की आय में सुधार नहीं हुआ क्योंकि अधिकांश अधिशेष ब्रिटेन को स्थानांतरित हो जाता था, जिससे ग्रामीण गरीबी और आर्थिक असमानता बढ़ी।

मार्क्स (1853) ने औपनिवेशिक भारत को वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था के संदर्भ में देखा और यह तर्क दिया कि ब्रिटिश शासन ने भारत को कच्चे माल के स्रोत और तैयार वस्तुओं के बाजार के रूप में परिवर्तित किया। उनके अनुसार यह प्रक्रिया औद्योगिक पूंजीवाद के विस्तार का हिस्सा थी, जिसने भारत की पारंपरिक अर्थव्यवस्था को कमजोर किया और उसे वैश्विक आर्थिक संरचना में एक परिधीय भूमिका में सीमित कर दिया।

बागची (1972) ने औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाया कि ब्रिटिश नीतियों ने भारत के औद्योगिक विकास को बाधित किया। उन्होंने विशेष रूप से यह तर्क दिया कि औद्योगिक पूंजी का संचय भारत में नहीं हो पाया क्योंकि अधिकांश लाभ ब्रिटेन में स्थानांतरित हो जाता था। उनके

अनुसार यह स्थिति भारत में पूंजी निर्माण की प्रक्रिया को अवरुद्ध करती रही, जिससे दीर्घकालिक आर्थिक विकास प्रभावित हुआ।

हबीब (2010) ने औपनिवेशिक आर्थिक संरचना का अध्ययन करते हुए यह बताया कि कर प्रणाली और व्यापारिक नीतियाँ शोषण के प्रमुख उपकरण थीं। उन्होंने यह तर्क दिया कि औपनिवेशिक शासन ने उत्पादन संबंधों को इस प्रकार परिवर्तित किया कि किसान और श्रमिक वर्ग अधिक निर्भर और शोषित हो गए। उनके अनुसार यह प्रक्रिया केवल आर्थिक नहीं थी, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक नियंत्रण का भी साधन थी।

बेयली (1988) ने भारतीय समाज और औपनिवेशिक शासन के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि आर्थिक शोषण ने सामाजिक संरचना को भी प्रभावित किया। उन्होंने यह दर्शाया कि औपनिवेशिक नीतियों ने पारंपरिक संस्थाओं को कमजोर किया और नई असमानताओं को जन्म दिया। उनके अनुसार आर्थिक निकासी की प्रक्रिया ने सामाजिक गतिशीलता को सीमित कर दिया और वर्ग विभाजन को गहरा किया।

रॉय (2011) ने आर्थिक इतिहास के पुनर्मूल्यांकन के संदर्भ में यह तर्क दिया कि औपनिवेशिक काल में कुछ क्षेत्रों में आर्थिक परिवर्तन हुए, किन्तु यह परिवर्तन असमान और सीमित थे। उन्होंने यह स्वीकार किया कि 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत महत्वपूर्ण है, किन्तु इसके साथ-साथ क्षेत्रीय विविधताओं और स्थानीय कारकों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

वॉशब्रुक (1988) ने औपनिवेशिक शासन की संरचनात्मक विशेषताओं का अध्ययन करते हुए यह बताया कि आर्थिक नीतियाँ केवल व्यापारिक हितों तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे प्रशासनिक नियंत्रण का भी हिस्सा थीं। उनके अनुसार आर्थिक निकासी की प्रक्रिया राज्य की नीतियों और संस्थागत ढांचे के माध्यम से संचालित होती थी, जिससे यह एक संगठित और निरंतर प्रक्रिया बन गई।

कुमार (1983) ने भारत के आर्थिक इतिहास का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि औपनिवेशिक शासन ने भारत के पारंपरिक उद्योगों को गंभीर रूप से प्रभावित किया। उन्होंने विशेष रूप से वस्त्र उद्योग के पतन को रेखांकित करते हुए यह तर्क दिया कि ब्रिटिश नीतियों ने स्थानीय उत्पादन को प्रतिस्पर्धा में कमजोर कर दिया, जिससे व्यापक बेरोजगारी और आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ।

टॉमलिन्सन (1993) ने औपनिवेशिक भारत की अर्थव्यवस्था का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि आर्थिक निकासी की प्रक्रिया ने भारत के विकास को बाधित किया। उनके अनुसार औपनिवेशिक नीतियाँ अल्पकालिक लाभ पर केंद्रित थीं और उन्होंने दीर्घकालिक विकास की संभावनाओं को नजरअंदाज किया, जिससे आर्थिक संरचना असंतुलित बनी रही।

सेन (1981) ने गरीबी और अकाल के संदर्भ में औपनिवेशिक नीतियों का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि आर्थिक शोषण ने खाद्य सुरक्षा को प्रभावित किया। उन्होंने यह तर्क दिया कि अकाल केवल प्राकृतिक कारणों से नहीं, बल्कि वितरण प्रणाली और नीतिगत विफलताओं के कारण उत्पन्न हुए, जो औपनिवेशिक शासन की संरचना से जुड़े थे।

फ्रेंकल (2005) ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से औपनिवेशिक भारत का अध्ययन करते हुए यह बताया कि आर्थिक नीतियाँ राजनीतिक नियंत्रण का साधन थीं। उनके अनुसार 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' केवल आर्थिक प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि यह सत्ता संरचना को बनाए रखने का एक माध्यम भी थी, जिसने भारत को निर्भर अर्थव्यवस्था में परिवर्तित किया।

डेविस (2001) ने उन्नीसवीं शताब्दी के अकालों का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाया कि औपनिवेशिक नीतियों ने इन संकटों को और अधिक गंभीर बना दिया। उन्होंने यह तर्क दिया कि वैश्विक बाजार से जुड़ाव और निर्यात-उन्मुख नीतियों के कारण स्थानीय आवश्यकताओं की अनदेखी हुई, जिससे व्यापक जनहानि और आर्थिक क्षति हुई।

तालिका १: साहित्य समीक्षा का सारांश और मुख्य निष्कर्ष

क्रम संख्या	**साहित्य संदर्भ**	**प्रमुख विषय**	**मुख्य निष्कर्ष**
1	नौरोजी (1901)	ड्रेन सिद्धांत	धन निकासी भारत की गरीबी का मुख्य कारण
2	दत्त (1902)	भूमि राजस्व	कर नीति से किसानों का शोषण
3	मार्क्स (1853)	वैश्विक पूंजीवाद	भारत परिधीय अर्थव्यवस्था बना
4	बागची (1972)	औद्योगिक विकास	पूंजी निर्माण बाधित
5	हबीब (2010)	कर और व्यापार	शोषण का संस्थागत स्वरूप

6	बेयली (1988)	सामाजिक प्रभाव	असमानता और वर्ग विभाजन बढ़ा
7	रॉय (2011)	पुनर्मूल्यांकन	क्षेत्रीय विविधताओं का महत्व
8	वॉशब्रुक (1988)	संस्थागत ढांचा	शोषण संगठित प्रक्रिया
9	कुमार (1983)	उद्योग पतन	वस्त्र उद्योग का विनाश
10	टॉमलिन्सन (1993)	आर्थिक संरचना	विकास बाधित हुआ
11	सेन (1981)	गरीबी और अकाल	नीतिगत विफलताएँ प्रमुख कारण
12	फ्रेंकल (2005)	राजनीतिक अर्थव्यवस्था	आर्थिक नीति सत्ता का साधन
13	डेविस (2001)	अकाल अध्ययन	औपनिवेशिक नीतियाँ संकट बढ़ाती हैं

3. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि औपनिवेशिक भारत में आर्थिक शोषण एक संगठित और बहुआयामी प्रक्रिया थी, जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना को गहराई से प्रभावित किया। 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' सिद्धांत इस शोषण को समझने का एक प्रभावी माध्यम प्रदान करता है, क्योंकि यह दर्शाता है कि किस प्रकार भारत से निरंतर धन का प्रवाह ब्रिटेन की ओर हुआ और इसने देश की पूंजी संचय प्रक्रिया को बाधित किया।

औपनिवेशिक नीतियों के परिणामस्वरूप भारत की पारंपरिक आर्थिक व्यवस्था कमजोर हुई, कृषि क्षेत्र संकटग्रस्त हुआ और औद्योगिक विकास अवरुद्ध हो गया। इसके अतिरिक्त, सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ भी बढ़ीं, जिससे व्यापक गरीबी और विकासहीनता की स्थिति उत्पन्न हुई।

हालाँकि कुछ विद्वानों ने औपनिवेशिक शासन के दौरान अवसंरचना विकास को सकारात्मक पक्ष के रूप में प्रस्तुत किया है, किंतु समालोचनात्मक दृष्टि से यह स्पष्ट है कि ये विकास मुख्यतः औपनिवेशिक हितों की पूर्ति के लिए किए गए थे।

अंततः, यह अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों ने भारत की आर्थिक स्वायत्तता को कमजोर किया और उसके दीर्घकालिक विकास को बाधित किया, जिसका प्रभाव आज भी आर्थिक असमानताओं के रूप में देखा जा सकता है।

संदर्भ सूची

Bagchi, A. K. (1972). *The political economy of underdevelopment*.

Bayly, C. A. (1988). *Indian society and the making of the British Empire*.

Davis, M. (2001). *Late Victorian holocausts*.

Dutt, R. C. (1902). *The economic history of India*.

Frankel, F. (2005). *India's political economy*.

Habib, I. (2010). *The agrarian system of Mughal India*.

Kumar, D. (1983). *The Cambridge economic history of India*.

Marx, K. (1853). *Articles on India*.

Naoroji, D. (1901). *Poverty and un-British rule in India*.

Roy, T. (2011). *The economic history of India*.

Sen, A. (1981). *Poverty and famines*.

Tomlinson, B. R. (1993). *The economy of modern India*.

Washbrook, D. (1988). *Progress and problems in the study of South Asian economic history*.